राजस्थान की ज्ञान

हमारे घरों की गीता बिगड़ रही है: स्वामी सर्वानंद सरस्वती

सरदारशहर। गीता जयंती के पावन अवसर पर गाँधी विधा मंदिर के शिक्षक प्रशिक्षण महाविधालय के प्रशाल में मुख्य अतिथिय उद्बोधन में स्वामी सर्वानंद सरस्वती ने वर्तमान विसंगतियों को उजागर करते हुए कहा कि आज हमारे घरों ने गीता बिगड़ रही है। विषम परिस्थियों में संस्थापक रामशरण जी महाराज की दृष्टि और कृतित्वों का स्मरण कराते हुए उन्हें मरूस्थल के मालवीय की उपमा दी। संस्था परिवार में संस्कारों की बयार से अभिभूत होकर मुख्य अतिथि के भगवान श्री कृष्ण की तरंग व सोच को जीवन में लाने का आह्वान किया। अपने उद्बोधन के अंत में गीता के कर्म दर्शन पर प्रकाश डालते हुए भावी पीढ़ी को भारतीय संस्कार, सभ्यता के साथ अपनी ऊर्जा को सकारात्मक दिशा के लिए प्रोत्साहित किया।

संस्थाध्यक्ष कनकमल दूगड़ ने राग केदार में गीता के कई श्लोकों का पाठ करते हुए कहा कि गीता का मानवीय मूल्य देवीय सम्पदा है। इसी मोक्ष एकादशी के दिन स्वामीजी की 28वीं संन्यास लेने की सालगिरह है और उनके गुरू स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज की जयंती व पुण्यतिथि श्री। इस पावन दिवस की महत्ता बताते हुए उन्होंने काहर कि भगवान को कर्म सौंपने से वह कल्याण हो जाता है और मानव कल्याण के लिए बोला गया झूठ भी सच से बड़ा होता है इस अवसर पर स्वामीजी की शख्सियत का स्मरण करते हुए उन्होंने कहा कि वे अहंकार से दूर और आत्मीयता से भरपूर थे।

इस अवसर पर सर्वप्रथम परिवार व मुख्य अतिथि द्वारा दीप प्रज्वलन कर श्रीमद भगवत गीता का पाठ किया गया। आचार्य श्री बालकृष्ण कौशिक जी ने वर्तमान में गीता की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला और गीता सार को अपने जीवन का आधार बनाने का आह्वान किया। स्वगत उद्बोधन किया में आई.ए.एस.ई. मान्य विश्वविधालय के कुलपति डॉ. आर.एन.शर्मा ने वर्तमान अशांति, अपराध और अत्याचार से मुक्ति हेतु गीता को आत्मसात करने का आह्वान किया। इस अवसर पर संस्था परिवार के सभी विधार्थी, अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे।

राजस्थान पत्रिका
चूरू, रविवार, 15 दिसम्बर 2013

'भारतीय संस्कारों को अपनाएं'

गांधी विद्या मंदिर में कार्यक्रम

सरदारशहर

sikar@patrika.com

गांधी विद्या मंदिर के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में गीता जयंती पर हुए कार्यक्रम को संबोधित करते हुए स्वामी सर्वानंद सरस्वती ने वर्तमान विसंगतियों को उजागर करते हुए कहा कि आज हमारे घरों की गीता बिगड़ रही है।

ऐसी विषम परिस्थियों में संस्थापक स्वामी रामशरण महाराज की दृष्टि और कृतित्वों का स्मरण कराते हुए स्वामी ने भगवान कृष्ण की सोच को जीवन में अपनाने का आह्वान किया।

उन्होंने गीता के कर्म दर्शन पर प्रकाश डालते हुए भावी पीढी को भारतीय संस्कार, सभ्यता के साथ अपनी ऊर्जा को सकारात्मक दिशा में लगाने की प्रेरणा दी। संस्थाध्यक्ष कनकमल दूगड़ ने राग केदार में गीता के कई श्लोकों का पाठ किया। इस अवसर पर आचार्य बालकृष्ण कौशिक व कुलपति डा. आरएन शर्मा ने भी विचार व्यक्त किए।